भूमिका

भारत में किसान मजदूरों की स्थिति प्रारंभ से ही संघर्षपूर्ण रही है। औपनिवेशिक काल में किसान मजदूरों का संघर्ष जमींदारों और ब्रिटिश सरकार के साथ था तो वहीं आजाद भारत में सरकार और मुनाफाखोर कंपनियों के साथ है। किसानों के श्रम को कभी भी गंभीरता से उत्पादन की प्रणाली के बतौर नहीं देखा गया है। जिस कारण किसान गरीबी और लगातार हो रहे शोषण से मजदूर बनने के लिए मजबूर होते गए। मजदूर बनने की प्रक्रिया के साथ ही किसानों का संघर्ष अधिक तीव्र और प्रखर होता चला गया। वर्तमान समय में जो भूमंडलीकरण की आंधी चल रही है, उसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए मुनाफा मुख्य है, इस मुनाफे में सरकारें उनके साथ हैं, इसी वजह से आज किसान अत्महत्या के आंकड़े 2 लाख के ऊपर पहुँच गए हैं। स्थिति यह है कि या तो किसानों की जमीनें जबरन बड़े-बड़े पवार प्लांटों के नाम पर अधिग्रहित की जा रही है, या उन्हें उचित मुआवजे के नाम पर भ्रमित किया जा रहा है, जिसके कारण किसान अपनी जमीने बड़े-बड़े उद्योगपतियों के हाथ बेचकर मजदूर बनते जा रहे हैं। किसान कर्ज के जाल में फंस रहे हैं। किसानों के लिए खेती घाटे का सौदा साबित हो रही है ऐसी स्थिति में किसानों के पास गांवों एवं शहरों में जाकर मजदूर बनने के अलावा दूसरा कोई मार्ग नहीं बचता है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय ***‘गोदान’ और ‘दो सेर धान’ में किसान मजदूर संघर्ष*** है। इस विषय को लेने का कारण यह रहा कि तुलनात्मक अध्ययन होने के कारण हिंदी और मलयालम साहित्य के दो प्रसिद्ध उपन्यासकर प्रेमचंद और तकषि शिवशंकर पिल्लै की रचनाओं से दोनों प्रान्तों के किसान-मजदूरों के संघर्षों को और भी यथार्थ रूप से समझने का प्रयास किया जा सकता है। दोनों उपन्यासकार साहित्य और समाज के अन्तःसंबंध को समझाते हुए उस समय की किसान-मजदूर समस्या को अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। हिंदी एवं मलयालम पृष्ठभूमि पर आधारित यह दोनों उपन्यास किसान-मजदूरों की मूलभूत समस्या को ही नहीं बल्कि उनके संपूर्ण जीवन यथार्थ को भी उभारने का प्रयास करते हैं। गोदान में दिखाया गया है कि किस प्रकार एक किसान

समाज में व्याप्त शोषण के कारण मजदूर बनने पर मजबूर हो जाता है। वहीं तकषि अपने पूरे उपन्यास में किसान-मजदूरों के संघर्ष के साथ-साथ मजदूरों के संगठित होकर विद्रोह करने को भी चित्रित करते हैं। दोनों उपन्यासों में किसान जहाँ एक तरफ पारिवारिक समस्याओं से संघर्ष करता है, वहीं दूसरी ओर उसे सामाजिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है।

समाज में मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है, जहाँ एक तरफ किसान व मजदूर दाने-दाने के लिए मोहताज हैं, वहीं दूसरी तरफ जमींदार वर्ग अपने भंडार गृहों में किसानों के हक के अनाज को छुपाए बैठे हैं। किसान मजदूर संघर्ष प्रेमचंद के समय भी था और आज भी है, किसान श्रमशील समाज की केवल आर्थिक इकाई ही नहीं है वह सांस्कृतिक एवं वैचारिक इकाई भी है। इसलिए किसान से संबंधी उपन्यास को केवल आर्थिक स्थितियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति न मानकर उसे संपूर्ण सांस्कृतिक एवं वैचारिक पर्यावरण के सृजनात्मक प्रतिफल के तौर पर लेना चाहिए। कृषि एवं किसान मनुष्य की आदिम भौतिक जरूरत रही है, इसलिए उसके महत्व को समझना बहुत जरूरी है।

शोध के क्षेत्र में वैसे तो प्रेमचंद के उपन्यास गोदान पर तो काफी काम हो चुके हैं लेकिन प्रेमचंद के 'गोदान' और तकषि शिवशंकर पिल्लै के 'दो सेर धान' में किसान मजदूर के संघर्ष से संबंधित विषय पर अभी तक बहुत ही कम काम हुए हैं। यह किसान-मजदूर संघर्ष आज के समसामयिक परिप्रेक्ष्य में ज्वलंत मुद्दा होने के साथ-साथ भारत में किसान मजदूर की स्थिति को भी व्याख्यायित करता है। किसान की समस्या को लेकर शोध के क्षेत्र में काफी काम हो चुके हैं, लेकिन प्रेमचंद के गोदान और तकषि के दो सेर धान को लेकर किसान-मजदूर संघर्ष विषय से संबंधित अभी तक कोई भी काम नहीं हुआ है। इस पूरे विषय को आज की परिस्थिति से जोड़ते हुए एक नया निष्कर्ष निकालने का प्रयास रहेगा।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को भूमिका और उपसंहार के अतिरिक्त चार अध्यायों में किया गया है। अंत में संदर्भ सूची दी गई है। इस शोध प्रबंध का प्रथम अध्याय '**तुलनात्मक साहित्य की सैद्धांतकी**'

है, साथ ही इसमें तुलनात्मक साहित्य का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, तथा इसके महत्त्व को विश्लेषित एवं व्याख्यायित करने का प्रयास किया है।

द्वितीय अध्याय में मैंने **'भारत में किसानों एवं मजदूरों की स्थिति'** को दिखाते हुए इसके अंतर्गत सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थितियों का वर्णन किया है साथ ही मैंने भारत में किसान एवं मजदूरों की प्रारंभ से लेकर अब तक की स्थिति को भी बताने का प्रयास किया है कि किस प्रकार भारत का किसान सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थितियों से संघर्ष कर रहा है। समय और परिस्थितियाँ बदलती हैं परंतु किसान के जीवन में किसी भी प्रकार का सकारात्मक परिवर्तन नहीं आता है। किसान किस प्रकार निरंतर जीवन में संघर्ष करते हुए मजदूर की श्रेणी में आ गए हैं, यह दिखाने का प्रयास किया गया है।

तृतीय अध्याय में मैंने **'रचनाकारों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'** दिखाते हुए प्रेमचंद का जीवन परिचय तथा उनके साहित्यिक, विचारधारात्मक पहलुओं को विश्लेषित करते हुए तकषि शिवशंकर पिल्लै के जीवन परिचय एवं उनके साहित्यिक परिचय का विश्लेषण किया है।

चतुर्थ अध्याय में मैंने **" 'गोदान' और 'दो सेर धान' में किसान मजदूर संघर्ष "** के तुलनात्मक स्वरूप को व्याख्यात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से इसके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं किसान मजदूर संघर्ष को दिखाने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय में दिखाया गया है कि किस प्रकार दोनों उपन्यासों के पात्र लगातार जीवन की कठिनाइयों से संघर्ष करते हैं। जमींदार, सूदखोर के शोषण का शिकार यह किसान-मजदूर हो रहें है। इस अध्याय में किसान-मजदूरों के संघर्ष को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्तर पर दिखाने के साथ-साथ किसान-मजदूरों का विद्रोहात्मक रूप भी उजाकर किया गया है। अंत में उपसंहार दिया गया है जिसमें संपूर्ण शोध का आलोचनात्मक रूप से विश्लेषण एवं संश्लेषण किया गया है।

सर्वप्रथम मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मेरे शोध विषय को न केवल अपने कुशल निर्देशन, उचित मार्गदर्शन एवं महत्वपूर्ण पुस्तकों के सुझाव से सहज बनाया, बल्कि समय-समय पर अपना अमूल्य समय देकर मेरे ज्ञान में भी वृद्धि की, जिसके परिणामस्वरूप यह शोध कार्य-क्रमबद्ध रूप में सम्पन्न हुआ।

साथ ही विभाग के समस्त अध्यापकों (प्रो. सूरज पालीवाल जी, प्रो. कृष्ण कुमार सिंह जी, डॉ. रामानुज अस्थाना जी, डॉ. बीर पाल सिंह यादव जी, डॉ. रूपेश कुमार सिंह जी) के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने सदैव अपना स्नेह एवं सहयोग दिया।

मैं आभार व्यक्त करता हूँ अपनी प्रिय मित्र प्रियंका शर्मा के प्रति जिनसे मुझे इस शोध प्रबंध लेखन में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। मेरे अग्रज भ्राता कुमार विश्वमंगल, प्रदीप त्रिपाठी के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपनी व्यस्तताओं में से मेरे लिए समय निकाला। साथ ही पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिए मैं म. गा. आ. हि. वि. वर्धा, महापंडित राहुल संस्कृत्यायन पुस्तकालय एवं साहित्य अकादमी पुस्तकालय (दिल्ली) के प्रति भी विशेष आभारी हूँ जिनसे मुझे कई महत्वपूर्ण पुस्तके प्राप्त हुई।

मैं दिल से आभार व्यक्त करता हूँ, अपने पूज्य माता (श्रीमति रेणु देवी)-पिता (श्री संजय कुमार विश्वकर्मा) एवं मामा जी (डॉ. रवीन्द्र कुमार शर्मा) का जिन्होंने मुझे जीवन की हर विषम परिस्थितियों में भी आशावान रहना सिखाया।

मैंने इस लघु शोध-प्रबंध को त्रुटी पूर्ण बनाने का पूरा प्रयास किया है यदि कोई भी त्रुटी रह गई हो तो उसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

मनीष कुमार